करामत की सत्यता –
क़ुरान व हदीस के आधार पर

अल्लाह तआ़ला के वह उच्च व पावन व प्रिय बन्दे जो अपने जीवन का पर पल अल्लाह तआ़ला की याद के लिए बिता देते हैं। नफ्स व स्वार्थ की इच्छा व कामना को समाप्त करते हैं। सांसारिक लुभाव व आकर्षण एवं मोह को छोड़ कर के अपनी सर्व शक्ति धर्म के प्रचार व उत्पथि में बिताया करते हैं।

ऐसे ऑलिया व पुण्यात्मा का सम्मान व प्रतिष्ठा का स्मरण क़ुरान में अनेक स्थान पर किया गया। इन उच्च ज़ात के लिए परलोक व आखिरत में उच्च स्थान, मध्य स्तर हैं एवं वह वरदान से संबोधित किए जाएंगे। किन्तु संसार में भी अल्लाह तआ़ला इन के सम्मान व प्रतिभा के प्रकट के लिए विशेषता प्रदान करता है। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- एवं निस्संदेह हम ने *ज़बूर* में अनुदेश के बाद ये लिख दिया निश्चय धरती के उत्तराधिकारी मेरे नेक बन्दे होंगे।

(सुरह अल अंबियाः 31:105)

इस आयत के विस्तार में विवरण के विशेषज्ञ ने लिखा है के धरती से तात्पर्य जन्नत की धरती है। एवं कुछ विशेषज्ञ ने फरमाया के इस से संसार की धरती तात्परय है तथा अ़ल्लामा इब्न कसीर ने इस आयत के प्रति में लिखा है के ऑलिया व पुण्यात्मा, संसार व परलोक प्रत्येक दो की धरती के वारिस होते हैः

भाषांतरः- अल्लाह तआ़ला इन चीज़ों से संबंध से वर्णन कर रहा है जिस का इस ने अपने नेक बन्दों के लिए स्वयं एवं पूर्णतः निर्णय कर दिया है के संसार व परलोक में इन के लिए कृपा है तथा संसार व परलोक में धरती इन की विरासत है।

(तफसीर इब्न कसीर, जिल्द 05, पः 384, सुरह अल अंबियाः 31:105)

जब अल्लाह तआ़ला ने ऑलिया अल्लाह को धरती का उत्तराधिकारी बना दिया तो इन लोग को अपने विशेष कृपा व करुणा से अधिकारी एवं स्वत्वधारी बना देता है। फिर इन से रीत के विरुद्ध कार्य प्रकट होते हैं। जिन्हें "करामत" कहा जाता है।

अहले सुन्नत व जमात का ऐक्य अखीदा व विश्वास है के ऑलिया अल्लाह की करामात सत्य हैं। जैसा के अखीदे के विद्या में पढ़ाई जाने वाली दर्स-निज़ामी की नामवर पुस्तक "शरह अखाइ़द नसफी" के पः 144 में वर्णन हैः-

भाषांतरः- ऑलिया किराम की करामात सत्य है।

(शरह अखाइ़द नसफी, पः 144)

मोअ़जज़ा एवं करामत के बीच अंतर

मोअ़जज़ा एवं *करामत* के बीच बुनियादी अंतर ये है के *मोअ़जज़ा* से तात्पर्य वह रीत व आदत के विरुद्ध कर्म है जो किसी बनी सि इन की नबूवत की सत्यता की दलील के रूप से प्रकट हुई हो। एवं *करामत* इस आदत के विरुद्ध कर्म को कहा जाता है जो नबूवत के दावे के बिना किसी धर्मनिष्ठ व दृष्ठा मोमिन से प्रकट होता है।

एवं यदि किसी ग़ैर-मुसलिम तथा निष्क्रिय व बदअ़मल से कोई आदत के विरुद्ध घटना स्पष्ट हो जाए तो इस *इस्तेदराज* कहा जाता है। जैसा के शरह अखाइ़द नसफी में हैः

वली की करामत, नबी की प्रतिभा पर साक्ष्य करती है-

आदत व रीत के विरुद्ध पेश आने वाले ऑलिया अल्लाह के घटना व करामतें वास्तव में नबी अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की उत्तमता व विशिष्टता का केन्द्र हुआ करती हैं अर्थात इमाम नबहानी की पुस्तक जामेअ़ करामात उल ऑलिया के प्रस्तावना में हज़रत शैख शहाब उद्दीन सुहरवरदी रहमतुल्लाहि अलैह व्याख्या करते हैः

भाषांतरः- आरिफ बिल्लाह इमाम शहाब उद्दीन सुहरवरदी रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित है, आप ने फरमायाः निश्चय ऑलिया अल्लाह से अनेक करामात का प्रकट होता है। जैसेः हवा में हाथिफ ग़ैबी (पवित्र आवाज) को सुना करते हैं। एवं बातिन से आवाज़ सुनते एवं पहुंचाते हैं। तथा धरती इन के लिए समेट दी जाती है। तथा वह रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के पालन व अनुगामी की बरकत से घटना घटित होने से पूर्व ही इन्हें जान लेते हैं। एवं ऑलिया अल्लाह की करामात वास्तव में अंबिया किराम अलैहिस सलाम के मोअ़जज़ात का परिणति एवं उपहात होता है।

(मुखद्दिमा जामेअ़ करामात उल ऑलिया, पः 36)

करामतों की अधिकता होने का कारण

अल्लाह तअ़ाला सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम को अंतिम पैगम्बर बनाया। अब कोई नबी या रसूल नहीं आएंगे, क़ियामत तक जितने लोग आएंगे। सब सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की पावन जात पर इमान लाने के मुहताज होंगे।

स्पष्ट है जो लोग अभी इसलाम की सीमा में प्रवेश नही हुए इन के लिए ऐसे रीत व आदत के विरुद्ध का पेश आना अवश्य है जो इन्हें इसलाम की ओर मोह करें एवं इमान लाने पर आकर्षित करें। इसी कारण से इस संप्रदाय व समुदाय के ऑलिया अल्लाह की करामतें अन्य उम्मतों के ऑलिया किराम की करामतों से अधिक हैं।

जैसा के अ़ल्लामा यूसुफ बिन इस्माइ़ल नबहानी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः

भाषांतरः- नबी रहमत सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की संप्रदाय व उम्मत के ऑलिया किराम की करामतें अधिक होने की हिकमत अल्लाह तअ़ाला सर्वश्रेष्ठ जानता है। ये है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के पावन जीवन में एवं आप के पवित्र देहान्त के बाद आप के मोअ़जज़ात की अधिकता के द्वारा सम्पूर्ण पैगम्बरों पर आप की सरदारी का प्रदर्शन है। क्यों के आप अंतिम पैगम्बर हैं एवं अल्लाह तअ़ाला के प्रिय व महबूब हैं। तथा क़ियामत तक आप का धर्म चलता रहेगा, इसी कारण से अवश्य है के धर्म की सत्यता व सच्चाई के दलील भी प्रत्येक ज़माने में प्रकट होते रहें। एवं इन मज़बूत दलीलों में आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की उम्मत व संप्रदाय के ऑलिया की करामतें हैं, जो वास्तव में आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम) ही के मोअ़जज़ात का फैज़ान है।

(मुखद्दिमा जामेअ़ करामात उल ऑलिया, पः 36)

करामत का सबूत- क़ुरान करीम से

प्रथम दलीलः

ऑलिया अल्लाह व धर्मनिष्ट की करामतों का वर्णन क़ुरान करीम में माननीय पर किया गया है।

सुरह आ़ले-इ़मरानः 03:37,में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- जब भी सैय्यदना ज़करिया अलैहिस सलाम, हज़रत मरयम अलैहिस सलाम के पास इ़बादत के स्थान में प्रवेश होते तो इन के पास खाने की चीज़ें उपस्थित पाते। आप ने फरमायाः अए मरयम! ये चीज़ें तुम्हारे लिए कहाँ से आती हैं? इन्हों ने कहाः (ये रिस्ख) अल्लाह तआ़ला के पास से आता है। निश्चय अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है बेहिसाब रिस्ख प्रदान करता है।

(सुरह आ़ले-इमरानः 03:37)

इस धन्य आयत में करामत की सच्चाई का स्पष्ट सबूत मिलता है के हज़रत मरयम अलैहिस सलाम नबी नहीं थीं बल्कि एक वलिया थी। तथा जब भी हज़रत ज़करिया अलैहिस सलाम आप के पास तशरीफ ले जाते तो दर्शन करते के वहाँ अनेक प्रकार के फल उपस्थित हैं। गरमी के मौसम में सरदी के फल उपस्थित होता तथा सरदी के मौसम में गरमी का फल उपस्थित होता।

इसी प्रकार बिना मौसम के फल का होना एवं ग़ैब (अदृष्ट) से पोषण व जीविका का आना ये हज़रत मरयम अलैहिस सलाम की करामत व चमत्कार है।

दूसरी दलील

सुरह कह्फ की आयत नः 25 में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और वे (कह्फ के लोग) अपनी गुफा में 300 वर्ष ठह्रे रहे तथा उन्हों ने इस पर 9 वर्ष उससे अधिक। आप फरमा दीजिए अल्लाह तआ़ला सर्वश्रेष्ठ जानता है के वह कितना समय ठह्र रहे।

(सुरह अल कह्फः 18:25,26)

यहाँ कह्फ के लोग का वर्णन किया जा रहा है के अल्लाह तआ़ला वह नेक व पुण्यात्मा बन्दे 309 वर्ष तक गुफा में रहे। इन के शरीर पर कुछ अंतर व बदलाव ना आया। इस लम्बे समय तक ना उन्हों ने कुछ खाया ना पिया, मानव शरीर की आवश्यकता व अपेक्षा खाना-पीना है, कोई व्यक्ति बिना खाय-पिय सालों तक जीना तो दूर की बात कुछ सप्ताह या महीने नहीं गुज़ार सकता। किन्तु कह्फ के लोगों ने 309 वर्ष का लम्बा समय समय बिताया।

ये अल्लाह तआ़ला की विशाल प्रकृति से कह्फ के लोग की करामत है के उन्हों ने 309 वर्ष का लम्बा समय गुफा में बिना कुछ खाय-पीय बिताया, इन के शरीर सुरक्षित रहे। तथा इन के दर पर रह्ने वाला कुत्ता भी सुरक्षित रहा।

तीसरी दलीलः-

सुरह अल कह्फ की आयत 17 में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- तथा आप सूर्य को उसके उदित होते समय देखेंगे के जब वह निकता है तो इन के गुफा से दाह्िनी ओर ह्ट कर गुज़रता है तथा जब वह ड्ूबता है तो बायें ओर करताता हुआ ड्ूबता है तथा वह (कह्फ के लोग) गुफा के विस्तृत भाग में हैं। ये अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से है।

(सुरह अल कह्फः 18:17)

ये एक सच्चाई है के सूर्य अपने एक निर्धारित व्यवस्था के प्रति गर्दिश व घूर्णन करता है। निकलने तथा डूबने के व्यवस्था व पद्धति में ना एक पल के लिए देर करता है तथा ना एक सेन्टीमीटर या एक मिलीमीटर उदित होता है।

ये प्रकृति व्यवस्था है। इस के बावजूद अल्लाह तआ़ला ने कह्फ के लोग को ये करामत व चमत्कार व उच्चता प्रदान की।

इस धन्य आयत में कह्फ के लोग की एक और करामत का वर्णन है के जितना समय उन्हों ने गुफा में गुज़ारा इतने समय तक सूर्य ने अपनी रोशन व दीप्तिमान को बदल दिया। जब वह उदित होता तो दाहिनी ओर हो जाता तथा जब डूबता है तो बायें ओर हो कर डूबता है, इसी प्रकार सूर्य की रोशनी इन पर ना पढ़ें।

सूर्य का अपने निर्धारित व्यवस्था से हट कर इस प्रकार उदित व डूबना अल्लाह की क़ुदरत की दलील तथा कह्फ के लोगों की करामत है।

इस आयत के विस्तार में इमाम फ़क़्रुद्दीन राज़ी रह्मतुल्लाहि अलैह कह्ते हैः

भाषांतरः- सूर्य का इस प्रकार उदित तथा डूबना एक प्रकृति के विरुद्ध घटना है तथा वह विशाल करामत है जिसे अल्लाह तआ़ला ने कह्फ के लोगों को प्रदान किया।

(तफसीर कबीर, सुरह अल कह्फः 18:17)

चौथी दलीलः-

सुरह अन नम्ल की आयत 40 में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- (हज़रत सुलैमान अलैहिस सलाम की सेवा में) एक व्यक्ति ने निवेदन किया, जिस के पास किताब का ज्ञान था के मैं इस (बिलखीस का सिंहासन) को आप के पास ला सकता हुँ। इस से पूर्व के आप की आफ पलक झपके। फिर जब (सुलैमान अलैहिस सलाम) ने इस (सिंहासन) को अपने पास रखा हुआ पाया तो फरमायाः ये मेरे रब का उदार अनुग्रह है।

(सुरह अन नम्लः 27:40)

इस आयत में सैयदना सुलैमान अलैहिस सलाम के एख उम्मती हज़रत आसिफ बिन बरखिया की करामत का वर्णन किया गया है।

जब हज़रत सुलैमान अलैहिस सलाम ने अपनी सेना से कहा के तुम में कौन ऐसा व्यक्ति है जो बिलखीस के आने से पूर्व इन के सिंहासन को मेरे पास ले आए? तो जिन्नों में से एक शक्तिशाली जिन्न ने निवेदन किया के आप अपने स्थान से उठने से पूर्व मैं इसे आप के पास ला सकता हुँ।

आप ने कहाः मझे वह सिंहासन और तुरंत चाहिए। तब हज़रत आ़सिफ बिन बरखिया ने आज्ञा चाही तथा पलक झपकने से पूर्व आप की सेवा में वह सिंहासन ले कर उपस्थित हो गए।

वह सिंहासन सोने का बना हुआ था। जिस पर अनमोल मोतियां ज़ी हुई थीं। वह सिंहासन सात महलों में से भीतर के महल में सुरक्षित रखा हुआ था। दरवाज़ों पर ताले थे। सुरक्षाकर्मी प्रबोधन कर रहे थे। ये बात बुद्धि में नहीं आती के इस प्रकार भारी तथा सुरक्षित सिंहासन को पल भर में एक देश से दूसरे देश लाया जा सके।

हज़रत आ़सिफ बिन बरखिया पल भर में इस भारी तथा उदस सिंहासन को यमन देश से सीरिया देश में हज़रत सुलैमान अलैहिस सलाम की सेवा में पेश कर दिया।

जैसा के अ़ल्लामा इब्न कसीर ने अपने विस्तार में तफसील वर्णन किया है (तफसीर इब्न कसीर, जिल्द 06, पः 191-193, सुरह अन नम्लः 27:40)

करामत की सच्चाई तथा इस का सबूत क़ुरान की आयों से पेश किया गया। अब ह़दीसों के आधार में कुछ करामतें वर्णन किया जा रहा हैः-

सहीह बुखारी में ह़दीस पाक हैः-

भाषांतरः- ह़ज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के ह़ज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः निश्चय अल्लाह तआ़ला ने आदेश कियाः जो मेरे किसी वली से शत्रुता व दुश्मनी रखता है मैं इस से युद्ध की घोषणा करता हुँ। तथा मेरा बन्दा व दास मेरे दरबार में किसी चीज़ के माध्यम नज़दीकी व निकटता प्राप्त नहीं किया जो इस फर्ज़ से अधिक प्रिय हो जो मैं ने इस के ज़िम्मे किया है। तथा मेरा बन्दा नफीलों के द्वारा लगातार मेरी नज़दीकी प्राप्त करता रहता है। यहाँ तक के मैं इस से प्रेम व स्नेह करता हुँ। फिर जब मैं इसे अपना प्रिय व प्यारा बना लेता हुँ तो मैं इस के कान बन जाता हुँ जिस से वह सुनता है। मैं इस की आँख हो जाता हुँ जिस से वह देखता है। मैं इस का हाथ हो जाता हुँ जिस से वह पकड़ता है। मैं इस के पाँव हो जाता हुँ जिस से वह चलता है। यदि वह मुझ से प्रश्न करे तो मैं अवश्य व निश्चय इसे प्रदान करता हुँ तथा यदि वह मेरी पनाह की इच्छा व स्वेच्छा करे तो निश्चय मैं इसे पनाह देता हुँ। तथा मैं किसी चीज़ को करना चाहुँ तो इस से विलम्भ नहीं करता, जिस प्रकार मोमिन की जान लेने से विलम्भ करता हुँ जब के वह मृत्यु को अप्रसन्न करे, तथा मैं इस को तकलीफ देना स्वीकार्य नहीं करता।

(सहीह बुखारी, ह़दीस संख्याः 6502)

इस हदीस खुदसी से ऑलिया अल्लाह व धर्म के पूर्वजों की प्रतिभा व उत्तमता का प्रकटन तथा इन की करामत का वर्णन हो रहा है के जब इन का सुन्ना व देखना, बोलना व चलने के पीछे अल्लाह तआ़ला की प्रकृति निर्णन है तो वह अपने कान से निकट की भी सुनते हैं तथा दूर की भी, अपनी आँख से निकट को भी देख लेते हैं तथा दूर को भी, अपने हाथ में असामान्य व असाधारण शक्ति रखते हैं। अपने पाँव में उत्कृष्ट व अपरूप शक्ति रखते हैं।

इसी कारण से ऑलिया अल्लाह अपनी सुन्ने की शक्ति से वह आवाज़ सुनते हैं जो दूसरे नहीं सुन सकते। अपनी आँखों से वह दृश्य देखते हैं जिसे साधारण नेत्र नहीं देख सकती। अपने हाथों में धारण की वह शक्ति रखते हैं जो दुसरों के पास नहीं होती, वह अपना जोर क़दम इस रूप से रखते हैं जिस में एक क़दम में कई मंज़िलें तय कर लेते हैं।

ये हदीस पाक भी करामत की सुरक्षा पर दलील कर रही है।

हज़रत सैयदना अबु बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत

हज़रत सैयदना सिद्धीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वसीयत की थी के देहान्त के बाद मेरे जनाज़े को सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के धन्य दरबार में धन्य हुजरे के सामने रख कर सलाम निवेदन करना तथा विनती करना के या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! अबु बक्र उपस्थिति की आज्ञा चाहता है। यदि खुद ही धन्य द्वार खुल जाए तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन पक्ष में दफन करना वरना जन्नतुल बखीअ़ में ले जाना, अर्थात जब हज़रत सिद्धीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का देहान्त हुआ तो आप के पवित्र जनाज़े को धन्य हुजरे के समक्ष रखा गया। जैसा के इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने तफसीर कबीर में व्याख्या किया हैः

जब हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जनाज़ा नबी रहमत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के धन्य हुजरे के पास रख कर निवेदन किया गयाः अस्सलामु अ़लैकुम या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! ये अबु बक्र पावन दर पर उपस्थित हैं, तो क्या देखते हैं के खुद ही द्वार व दरवाज़ा खुल गया तथा पावन रौज़े से ये आवाज़ सुनाई दी के हबीब को हबीब के पास ले आओ! निश्चय हबीब अपने हबीब से मिलने का इच्छुक है।

(तफसीर कबीर, सुरह अल कह्फ: 18:09)

हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत

इमाम बैहखी की दलाइ़ल नबूवह, मिश्कातुल मसाबीह तथा ज़ुजाजातुल मसाबीह में व्याख्या हैः

हज़रत सैयदना अबदुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक सेना को रवाना किया तथा इस सेना पर एक व्यक्ति को मुखिया व नायक को नियुक्त किया जिन्हें सारिया कहा जाता है। इस दौरान के हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुत्बा (धर्मोपदेश) निर्देश कर रहे थे के आप ने कहाः सारिया! पर्वत के दामन में आ जाओ। इस के बाद सेना के एक सैनिक आए तथा इन्हों ने कहाः अए मोमिनों के मुखिया! हम ने अपने विरोधियों से सामना किया, वह हमें पराजय कर चुके ही थे के हम ने किसी आवाज़ देने वाले की आवाज़ सुनीः"ऐ सारिया! पर्वत के दामन में आ जाओ! तो हम ने अपनी सेना को पर्वत की ओर पीछे कर दिया तथा अल्लाह तआ़ला ने इन को पराजय दी"।

(दलाइ़ल उन नबूवह, ह्दीस संख्याः 2655 / मिश्कातुल मसाबीह, बाबुल करामात, ज़ुजाजातुल मसाबीह, बाबुल करामात)

ये रिवायत हज़रत फारूख आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कई एक करमातों पर दलील करती है। आप की एक करामत ये है के आप ने मदीने में रह कर दूर के स्थान नाहवंद (फारस, अब ईरान) में होने वाले युद्ध का दर्शन किया, दूसरी करामत ये है के आप ने अपनी आवाज़ वहाँ पहुंचाई, जहाँ किसी यन्त्र से सहायता लिए बिना केवल मनुष्य की शक्ति की बुनियाद पर आवाज़ पहुंचाई। सम्भव नहीं, तूसरी करामत ये है के युद्ध में उपस्थित सम्पूर्ण सदस्य ने आप की आवाज़ सुनी, एवं चौथी करामत ये है के आप की बरकत से विजय व जीत इन को मिल गई, तथा वह सफल से आभूषण हुए, जैसा के मुल्ला अ़ली खारी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः

इस घटना में हज़रत उ़मर फारूख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अनेक करामतें हैं- युद्ध को देखना, अपनी आवाज़ पहुंचाना, सेना का आप की आवाज़ सुन्ना तथा आप की बरकत से इन का विजय व जीत होना।

(मिरखातुल मफातीह, शरह मिश्कातुल मसाबीह)

हज़रत सैयदना फारूख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की केवल यही करामत नहीं के आप मीलों दूर रहने वाली जाति को आवाज़ देते हैं तो वह आप की धन्य आवाज़ सुनते हैं बल्कि आप ने मदीने में रह कर इजिप्ट में बहने वाली नदी *नील* को पत्र के द्वारा फरमाया तो वह नदी व दरिया भी आप का आदेश मान लिया है। जैसा के इमाम तबरानी रहमतुल्लाहि अलैह ने रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः- जब इजिप्ट पर विजय हुई तो वहाँ के निवासी हज़रत अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन करने लगेः निस्संदेह ये नदी *नील* प्रत्येक वर्ष एक युवक का अपेक्षित होता है, तथा हम इस में एक लड़की को ड़ालते हैं, यदि हम ऐसा ना करेंगे तो नदी नहीं बहेगी। जिस के परिणाम में नगर वीरान हो जाएंगें तथा लोग अकाल

से भर जाएंगे। ये सुन कर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत सैयदना फारूख आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सेवा में इस की सूचना करवाई तो हज़रत फारूख आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सन्देश भेजा के इसलाम पूर्व बुराईयों को झूठे घोषित देता है। तथा इन की ओर एक पत्र रवाना किया, जिस में आप ने ये लिखा ताः अल्लाह तआला के नाम से शुरु करता हुँ जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है। अल्लाह के बन्दे उमर बिन खत्ताब की ओर से इजिप्ट की नदी *नील* के नाम। अए नदी! यदि तू अपनी इच्छा से रवां है तो हमें तेरी अवश्यकता व अपेक्षा नहीं, तथा यदि तू अल्लाह तआला के आदेश से बहता है तो अल्लाह तआला के आदेश से जारी हो जा। (पत्र लिखने के बाद) आप ने आदेश दिया के इस लिखित को *नील* की नदी में डाल दिया जाए। जब आप का पत्र नदी में डाला गया तो वह इसी रात 16 गज़ की बुलंदी से जारी हो गया तथा प्रत्येक 6 गज अदिक बुलंदी से पहन्ने लगा।

(अर रियाज़ उन नज़रा फी मनाखिबी अशरा, अल बाबुस सानी फी मनाखिबी अमीरिल मोअमिनीन अबी हफ्स उमर बिन खत्ताब)

यदि नदी के पानी की कोई समस्या हो तो कोई भी व्यक्ति नदी को लिखे या पत्र रवाना नहीं करता। यदि कोई किसी नदी के नाम पत्र लिख दे तो इस के बारे में आशा भी नहं की जाती के नदी इस पत्र के अनुसार पहन्ने लग जाएगा, तथा इन की अवश्यकता पूरी करेगा।

किन्तु यहाँ मामला आदत तथा असामान्य, बुद्धि के विरुद्ध है, तो हज़रत फारूख आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत है के नदी के नाम पत्र रवाना भी करते हैं, तथा वह लिखे हुए आदेश पर समापन भी करता है।

हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत

हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की असीमित करामतें हैं। जिन में यहाँ एक करामत वर्णन की जा रही है। इमाम फक्रउद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह की *तफसीर कबीर* में रिवायत हैः

भाषांतरः- जहजाह ग़फ्फारी के नाम के एक व्यक्ति ने हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य हाथ से लाठी छीन ली तथा इसे अपने घुटने पर रख कर तोड़ दिया तो इस के घुटने में फोड़ा हो गया।

(तफसीर कबीर, सुरह अल कह्फः 18:09)

अ़ल्लामा खासी अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की पुस्तक *अश शिफा* में तथा इमाम नबहानी की पुस्तक *जामेअ़ करामात उल ऑलिया* में वर्णन है के इसी फोड़े के कारण से व्यक्ति की मृत्यु हो गई।

(अश शिफा, जिल्द 02, पः 57 / जामेअ़ करामात उल ऑलिया, जिल्द 01, पः 151)

हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामात

तफसीर कबीर, तफसीर नीसाबुरी तथा तफसीर अस सिराज उस मुनीर में रिवायत व्याख्या हैः-

भाषांतरः- रिवायत वर्णन की गई है के हज़रत सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चाहन वालों में एक व्यक्ति ने चोरी की तथा वह एक काला गुलाम व दास था। इन्हें आप (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की सेवा में लाया गया तो आप ने आदेश दियाः क्या तुम ने चोरी की? इन्हों ने कहाः हाँ! तो आप ने इन का हाथ काटने का आदेश दिया। फिर वह साहब जब हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास से वापस हुए तो हज़रत सैयदना सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तथा इब्न

उल करा से मुलाकात हुई। इब्नुल करा ने कहाः तुम्हारा हाथ किस ने काटा? इन्हों ने कहाः मेरा हाथ मोमिना के सरदार, मुसलमानों के अध्यक्ष, रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जमाई, सैयदा फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पति ने काटा। इन्हों ने कहाः हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तुम्हारे हाथ काटे तथा तुम इन की प्रशंसा कर रहे हो? इन्हों ने कहाः मैं इन की प्रशंसा कियों ना करूँ? आप ने तो सत्य की नीव पर मेरा हाथ काटा है। तथा मुजे नरक से स्वतंत्र किया है। जब हज़रत सैयदना सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ये सुना तो आप ने हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस घटना की सूचना दी, तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस काले व्यक्ति को बुलाया तथा अपना ध्य हाथ इन के बूज़ू पर रखा, तथा दस्ती से इसे ढ़ांक दिया, तथा कुछ दुआएं की, रावी कहते हैं अचानक हम ने आकाश से आवाज़ सुनी "हाथ से कपड़ा उठा दो!" तो हम ने उसे उठा दिया, क्या देखते हैं के हाथ अल्लाह तअ़ाला के आदेश तथा इस की श्रद्धा से उपचार पा गया।

(तफसीर कबीर, सुरह अल कह्फः 19:09 / तफसीर नीसाबुरी, सुरह अल कह्फः 18:09, जिल्द 05, पः 69 / तफसीर सिराज उल मुनीर, जिल्द 01, पः 2227)

हज़रत सैयदना हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत

शवाहिद अन नबूवह में इमाम अबदुर रहमान जामी रहमतुल्लाहि अलैह ने रिवायत व्याख्या की हैः

भाषांतरः- हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज्ज के अवसर पर पावन मक्का पैदल चले जा रहे थे तो आप के क़दम में वरम आ गया। आप के सेवक नें निवेदन किया के आप किसी सवारी पर सवार हो

जाएं ताकि पैरों की सूजन कम हो जाए। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस की विनती स्वीकार कर ना की तथा कहाः जब अपनी मंज़िल पर पहुंचुं तो तुम्हें एक हबशी मिलेगा, इस से तेल खरीद लेना, आप के गुलाम ने कहाः हम ने किसी भी स्थान कोई दवा ना पाई तथा जब अपनी मंज़िल पर पहुंचे तो हज़रत ने फरमायाः ये वह गुलाम है जिस के बारे में तुम से कहा गया। जाओ! इस से तेल खरीदो तथा मूल्य संपादन रको। गुलाम जब तेल खरीद ने के लिए हबशी के पास गया तथा तेल पूछा तो हबशी ने कहाः किस के लिए खरीद रहे हो? गुलाम ने कहाः हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिए तो हबशी ने कहाः मुझे आप के पास ले चलो, मैं आप का गुलाम हुं, जब हबशी हज़रत के पास आया तो निवेदन कियाः मैं आप का गुलाम हुं तेल का मूल्य नहीं लूंगा। बस मेरी पत्नी के लिए दुआ करीए। वह प्रसव-काल (पेट का दर्द) में व्यस्त है तथा दुआ करीए के अल्लाह तआला आरोग्य कर व स्वस्थ बच्चा प्रदान करे। हज़रत ने फरमायाः घर जाओ! अल्लाह तआला तुम्हें वैसा ही बच्चा प्रदान करेगाः जैसा तुम चाहते हो तथा वह हमारा पैरोकार रहेगा, हबशी घर पहुंचा तो घर की स्थिति वैसी ही पाई जैसी सुनी थी।

(शवाहिद अन नबवह, पः 302)

इस रिवायत में हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गई करामतें वर्णन हैः एक करामत ये के वरम कम होने की दवा कहाँ और किस के पास मिलेगी? आप ने पूर्व ही बताया, दूसरी ये के हबशी को सहीह व अनुरूप लड़का होने की दुआ की तथा दुआ की बरकत का वैसा ही प्रकटन हुआ। तीसरी करामत ये है के वह लड़का कैसा होगा इस की भी सूचना प्रदान की के वह आज्ञाकारी होगा.

हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामतें

अ़ल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ सालेही रहमतुल्लाहि अलैह ने इब्न अबी दुनिया के हवाले से सुबूलुल हुरा वर्रशाद में रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः- हज़रत इब्न अबी लुदनिया हज़रत अब्बास बिन हिशाम मुहम्मद कूफी रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित किया है, वह अपने पिता से और वह अपने दादा से वर्णित करते हैं- ज़ुरआ नामी एक व्यक्ति करबला के मैदान में था। इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इस समय एक तीर फैंका जब आप ने पीने के लिए पानी की इच्छा की तथा पीना चाहा, वह तीर आप के और पानी के बीच आकर हलख में छुब गई। इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ की अए अल्लाह इस को प्यासा कर दे, रावी ने कहाः इस की मृत्यु के समय वहाँ उपस्थित लोगों ने कहाः इस व्यक्ति के पेट में गरमी, पीठ में सरदी होने लगी, जिस के कारण वह चीक़ने तथा चिल्लाने लगा, जब के इस के सामने बर्फ और पीछे अंगेठी उपलब्ध थी। वह कहा रहाः मुझे पानी पिलाओ! प्यास ने मुजे हलाक कर दिया, तो इस के पास पानी, दूध मिला हुआ इतना शहद लाया जाता जो पांच मनुष्य को काफी होता तो वह सब कुछ खा लेता, फिर यही कहताः मुझे पिलाओ! प्यास ने मझे नास कर दिया। फिर इस का पेट ऊंट के पेट के प्रकार चीर गया।

(सुबूलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 11, पः 79)

हज़रत सैयदना इमाम ज़ैनुल अ़ाबिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत

इमाम मुहम्मद अ़ली सब्बान रहमतुल्लाहि अलैह ने इसअ़ारिफुल राग़िबीन में रिवायत व्याख्या की हैः

जिस समय अबदुल मुल्क बिन मरवान इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मदीने से भारी ज़ंजीरें तथा बेड़ियों में क़ैद कर के ले जा रहा था इस समय इमाम ज़ुहरी रहमतुल्लाहि अलैह आप को विदा करने के

लिए उपस्थित हुए तथा रोते हुए कहने लगेः अए काश! के मैं आप के स्थान पर होता, तो आप ने उपदेश किया तुम ये समझते हो के ये मुझे तकलीफ पहुंचाती है, यदि मैं चाहुँ तो ऐसा कभी ना होता, बात बस इतनी है के ये मुझे अल्लाह तआ़ला की याद दिलाती है। फिर आप ने अपने दोनों हाथों तथा पैरों को क़ैद से निकाल दिया तथा दोबारा वापस ड़ाल दिया।

(इसआ़रिफुल राग़िबीन फी सीरह मुसतफा, पः 239)

ह़ज़रत ग़ौसे आ़ज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत

ह़ज़रत शैख मोमिन बिन ह़सन शबलंजी रह़मतुल्लाहि अलैह़ ने नूरुल अबसार में व्याख्या किया हैः

भाषांतरः- ह़ज़रत शैख दमीरी रह़मतुल्लाहि अलैह़ ने *ह़यैतुल ह़ैवान* में लिखा के ह़म ने सह़ीह़ सनद के साथ रिवायत वर्णन की है के ह़ज़रत शैख अबदुल खादिर जीलानी रह़मतुल्लाहि अलैह़ एक बार प्रवचन कर रहे थे के इस समय हवा तेज़ चल रही थी। अचानक आप के समारोह़ के ऊपर से एक चील गुज़री, तथा आवाज़ें करने लगी, प्रेक्षकों में ह़ल-चल पैदा हो गई। तब ह़ज़रत ग़ौस आ़ज़म रह़मतुल्लाहि अलैह़ ने हवा को आदेश दियाः अए हवा! इस चील की गरदन को उड़ा दे! तो इसी पल इस का शरीर एक कोने में गिरा तथा सर दूसरे कोने में, आप अपनी कुरसी से नीचे उतरे तथा अपने धन्य हाथ से इसे पकड़ा। तथा दुसरा हाथ इस पर फेरा एवं *बिसमिल्लाह ह़िर्रह़मान निर्रह़ीम* पढ़ा तो इसी समय वह चील जीवित हो गई एवं हवा में उड़ने लगी, सम्पूर्ण लोगों ने इस का दर्शन किया।

(नूरुल अबसार, पः 260)

ह़ज़रत ग़रीब नवाज़ रह़मतुल्लाहि अलैह़ की करामत

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की सेवा में एक व्यक्ति मुरीद होने के उद्देश्य से उपस्थित हुआ किन्तु वह आप को हानि व नुकसान पहुंचाना चाहता था। आप ने इस का उद्देश्य जान लिया एवं मुस्कुरा कर कहाः दरवेश, दरवेशियों के पास दिल की सफाई के लिए उपस्थित होते हैं, ना के अत्याचार करने के लिए। तुम जिस नीयत से आए हो वह कार्य कर लो! ये सुन कर वह व्यक्ति तुरंत अपनी आस्तीन से हथियार निकाल कर फैंक दिया तथा तौबा कर के आप का मुरीद व अनुयायी का उद्देश कर लिया। तथा इसी समय मुसलमान हो गया। ये करामत देखते ही बहुत से लोग मुसलमान हो गए।

(सीयरुल अख्यार, महफिल ऑलिया, पः 344-345)

हज़रत शाह नक्षबंद रहमतुल्लाहि अलैह की करामत

अ़ल्लामा यूसुफ बिन इसमाइ़ल नबहानी रहमतुल्लाहि अलैह ने जामेअ़ करामातुल ऑलिया में रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः- हज़रत शैख अ़लाउद्दीन अत्तार रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमायाः मैं बादल वाले दिन हज़रत ख्वाजा मुहम्मद बहाउद्दीन नक्षबंद रहमतुल्लाहि अलैह की सेवा में उपस्थित था। आप ने मुझ से निर्देश कियाः क्या ज़ोहर की नमाज़ का समय आरम्भ हो चुका है? मैं ने निवेदन कियाः नहीं। तो आप ने निर्देश कियाः आकाश की ओर देखो! जब आकाश की ओर नेत्र उठाई तो मैं ने कोई परदा नहीं पाया, तथा मैं ने देखा के सम्पूर्ण आकाश के फरिश्ते ज़ोहर की नमाज़ संपादन करने में व्यस्त हैं। आप ने निर्देश कियाः अब तुम क्या कहते हो? क्या ज़ोहर का समय हो चुका है? जो कुछ मुझ

से हुआ मैं इस पर लज्जित हुआ तथा तौबा की, एवं इस के कारण से अधिक समय तक मैं अपने भीतर बड़ा बोझ सिद्ध करता रहा।

(जामेअ़ करामात उल ऑलिया, जिल्द 01, पः 247)

ह़ज़रत शहाब उद्दीन सुहरवरदी रहमतुल्लाहि अलैह की करामत

ह़ज़रत अबुल हसनात सैय्यद अबदुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुह़द्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने *ह़ाशिय ज़ुजाजातुल मसाबीह* में *मिरखातुल मफातीह* के ह़वाले से रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः- ह़ज़रत नूरउद्दीन अ़बदुर रहमान जामी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी पुस्तक *नफहातुल उन्स फी ह़ज़रात असह़ाब अल खुद्स* में एक पूर्वज से रिवायत व्याख्या की के इन्हों ने ह़जरे-असवद के इस्तेलाम (चूमना) के समय क़ुरान करीम की तिलावत आरम्भ की तथा कअ़बे के बाब के सम्मुख व सामने आने तक सम्पूर्ण क़ुरान करीम तिलावत कर किया।

ह़ज़रत शहाब उद्दीन सुहरवरदी रहमतुल्लाहि अलैह के नंदन ने अपने पूज्य पिताजी से इतने ही समय में सम्पूर्ण क़ुरान करीम एक-एक शब्द तथा एक-एक अक्षर आरम्भ से अंत तक सुना।

(ह़ाशिय ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 04, पः 81)

अलह़मदुलिल्लाह (सब प्रशंसा अल्लाह तआ़ला ही के लिए है) करामत की सत्यता को क़ुरान करीम की आयतों, ह़दीसों के आधार पर वर्णन किए गए तथा खुलेफा राशेदीन, हसनैन करीमैन तथा तरीक़त के चारो इमाम की करामतें अधिप्रमाणित पुस्तकों से वर्णन किए गए।

अल्लाह तआ़ाला हमें अहले सुन्नत व जमाअ़त के विश्वास पर अंतिम समय तक स्थापित रखे तथा ऑलिया अल्लाह के जीवन के अनुसार जीवन बिताने की मार्गदर्शन प्रदान करे।

आमीन